



एग्री आर्टिकल्स

(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)

वर्ष: 01, अंक: 04 (सितम्बर-अक्टूबर, 2021)

www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

जौ की वैज्ञानिक विधि द्वारा खेती एवं फसल उत्पादन : आमदनी बढ़ाने का एक आसान उपाय

(*अनिल कुमार, कोमल शेखावत एवं स्वर्णलता कुमावत)

शोधार्थी, स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर, राजस्थान- 334006

*anilkumarthakan@gmail.com

जौ पोषक एवं औषधीय गुणों से भरपूर खाद्यान्न के साथ साथ माल्ट एवं बीयर उद्योग के लिए भी महत्त्वपूर्ण फसल है। देश के कुल जौ उत्पादन का 20-25% जौ माल्ट उद्योग में प्रयोग किया जाता है। कुछ क्षेत्रों में इसे हरे चारे के लिए भी उगाया जाता है। जौ की पुनर्वृद्धि क्षमता को देखते हुए वर्तमान में इसे द्विउद्देशीय फसल के लिए भी प्रोत्साहित किया जा रहा है ताकि एक ही फसल से किसान को हरा चारा व अनाज प्राप्त हो सके। जौ की फसल लवणीय व क्षारीय भूमियों के साथ साथ कमजोर व बारानी क्षेत्रों में कम लागत पर भी अच्छा प्रदर्शन करने की क्षमता रखती है। राजस्थान देश का प्रमुख जौ उत्पादक प्रदेश है यहां अधिकांश क्षेत्रों में जौ की खेती की जाती है। क्षेत्रफल की दृष्टि से जयपुर, सीकर, श्रीगंगानगर, भीलवाड़ा, अजमेर व हनुमानगढ़ प्रमुख जौ उत्पादक जिले हैं। जौ का उच्च गुणवत्तायुक्त बीज व अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखें।

पृथक्करण दूरी

जौ के आधार बीज उत्पादन के लिए 3 मीटर तथा प्रमाणित बीज के लिए 3 मीटर की दूरी रखें।

खेत का चुनाव

बीज उत्पादन के लिए उस खेत का चुनाव करें जिसमें पिछले वर्ष जौ की फसल ना ली गयी हो। साधारणतया जौ की खेती समी प्रकार की भूमि में की जा सकती है लेकिन अच्छे जल निकास वाली कार्बनिक पदार्थयुक्त बलुई दोमट से दोमट व मटियार भूमियाँ इसकी खेती के लिए उत्तम है। लवणीय व क्षारीय भूमियों में भी जौ की कुछ विशेष किस्में उगाई जा सकती है। वर्षा ऋतु में जलमग्न क्षेत्रों का पानी सूखने के बाद संरक्षित नमी पर भी जौ की बारानी खेती की जा सकती है।

खेत की तैयारी

खरीफ फसल काटने के बाद खेत की जुताई कर पलेवा करें। इसके बाद हैरो व कल्टीवेटर से जुताई कर भूमि को भुरभुरा व खरपतवार रहित बनाकर बुवाई के लिए तैयार करें।

बुवाई का समय

जौ की बुवाई का उपयुक्त समय नवम्बर का प्रथम पखवाड़ा है हालांकि नवम्बर के अंत तक भी देरी से बोयी जाने वाली किस्मों की बुवाई की जा सकती है।

बीज दर व बुवाई

सामान्य परिस्थितियों में 100 किलो बीज प्रति हैक्टर व कतार से कतार की दूरी 22.50 सेमी रखें। लवण प्रभावित क्षेत्रों में या देरी से बुवाई करने पर 125 किलो बीज प्रति हैक्टर डालें। बीज की बुवाई 5 सेमी से अधिक गहराई पर न करें।

बीज उपचार

बीज को कार्बोक्सिन (विटावेक्स) 2 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित कर बुवाई करें। दीमक की रोकथाम के लिये प्रति 100 किलो बीज को 400 मिली क्लोरपायरीफॉस 20 ई.सी. से अच्छी तरह उपचारित करें। अजेटोबेक्टर व पीएसबी कल्चर से उपचार करके बुवाई करने पर पौध की बढ़वार अच्छी होती है। बीज को पहले फफूंदनाशी उसके बाद कीटनाशी और अन्त में अजेटोबेक्टर व पीएसबी कल्चर से उपचारित करें।

खाद व उर्वरक

तीन वर्ष में एक बार 10-15 टन प्रति हैक्टर की दर से सड़ी गोबर की खाद खेत में डालनी चाहिए। सिंचित क्षेत्रों प्रति हैक्टर 80 किलो नत्रजन व 40 किलो फास्फोरस का प्रयोग करें। नत्रजन की आधी मात्रा तथा फास्फोरस की पूरी मात्रा बुवाई के समय ऊर कर दें। नत्रजन की शेष आधी मात्रा दो बार में पहली व दूसरी सिंचाई पर छिटककर दें। असिंचित क्षेत्रों में सभी उर्वरकों की आधी मात्रा बुवाई के समय ऊर कर दें।

खड़ी फसल में बुवाई के करीब 40 दिन बाद 0.5% जिंक सल्फेट + 2% यूरिया के घोल का छिड़काव लाभकारी पाया गया है। कमजोर भूमियों से अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए खड़ी फसल में पुष्पावस्था से दाना बनने की अवस्था पर 1% घुलनशील एन.पी.के. (19:19:19) का छिड़काव भी करें।

निराई-गुड़ाई व खरपतवार नियंत्रण

खरपतवार नियंत्रण, नमी संरक्षण व भूमि में वायु संचार हेतु पहली सिंचाई के बाद कुदाली से निराई-गुड़ाई करें। रसायन विधि द्वारा चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों के नियंत्रण के लिए बुवाई के 30-35 दिन बाद 2-4, डी एस्टर साल्ट 500 ग्राम या 2-4, डी अमाइन साल्ट 750 ग्राम सक्रिय तत्व 500-700 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

सिंचाई

जौ को भारी भूमियों में 2-3 व हल्की भूमियों में 4-5 सिंचाईयों की आवश्यकता होती है। बुवाई के 25-30 दिन बाद पहली सिंचाई दें। इसके बाद आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहना चाहिए। जौ में पुष्पावस्था व दाने की दूधिया अवस्था पर खेत में पर्याप्त नमी का होना अनिवार्य है।

पाले से बचाव

पाला पड़ने की संभावना दिखाई देते ही फसल पर 0.1 प्रतिशत गंधक के तेजाब का छिड़काव करें व आवश्यकतानुसार 10 दिन के अंतराल पर छिड़काव दोहरावें। फसल की सिंचाई करें व रात्रि के समय खेत के चारों तरफ घास-फूस जलाकर धुआं करें।

रोगिंग

आनुवांशिक व भौतिक शुद्धता बनाए रखने हेतु रोगिंग एक सतत व आवश्यक प्रक्रिया है जिसके तहत समय-समय पर खेत से अवांछित पौधों को उनके रंग, बनावट व आकार के आधार पर खेत से उखाड़कर बाहर फेंक देवें साथ ही खरपतवार व बीमार पौधों को भी उखाड़ कर नष्ट कर देवें।

पौध संरक्षण

जौ की खड़ी फसल में रोग व कीट नियंत्रण हेतु निम्न उपाय अपनावे:-

- दीमक का प्रकोप दिखाई देने पर 4 लीटर क्लोरोपायरीफॉस 20 ई.सी. प्रति हैक्टर सिंचाई के पानी के साथ देवें। जैविक विधि द्वारा दीमक नियंत्रण हेतु 5 किलो बावेरिया फफूंद को 100 किलो नमी युक्त सडी देशी खाद में मिलाकर 72 घण्टे रखें व बुवाई से पहले भूमि में अच्छी तरह मिलावें।
- मोयला, मकड़ी व तेला के नियंत्रण हेतु डाइमिथोएट 30 ई.सी. या मिथाईल डिमेटॉन 25 ई.सी. या फर्माथियान 25 ई सी या ट्राइजोफास 40 ई.सी. 1.0 लीटर या थायोमैथोकजाम 25 डब्ल्यू जी 100 ग्राम या एसीफेट 75 एस पी 500 ग्राम प्रति हैक्टर की दर से 600-700 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- झुलसा एवं पत्ती धब्बा रोग से बचाने के लिए जनवरी के प्रथम सप्ताह में 15 दिन के अन्तराल पर 2 किलो प्रति हैक्टर की दर से मेंकोजेब का पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। .
- रोली नियंत्रण का सर्वोत्तम उपाय रोलीरोधक क्रिस्मों का प्रयोग करना है। जहां देशी क्रिस्मों का प्रयोग किया गया है वहाँ सुरक्षात्मक उपाय के रूप में गंधक का चूर्ण 25 किलो/हैक्टर की दर से भुरकाव करें या मेंकोजेब 2 किलो/हैक्टर की दर से पानी में घोल बनाकर छिड़कें।
- आवृत कंडवा एवं पत्ती कंडवा के लक्षण दिखाई देते ही रोगग्रस्त पौधों को जड़ से उखाड़कर जला देवें ताकि रोग का फैलाव न हो। इस बीमारी की रोकथाम के लिए बीज को कार्बोक्सिन (विटावेक्स) 2 ग्राम प्रति किल बीज की दर उपचारित कर बुवाई करें।
- मोल्या प्रभावित क्षेत्रों में गर्मियों में गहरी जुताई कर खेत को खुला छोड़े व बुवाई से पहले 45 किलो कार्बोफ़थूरान 3% कण प्रति हैक्टर की दर से 10 किलो यूरिया के साथ मिलाकर भूमि में उरकर डालें।
- झुलसा एवं पत्ती धब्बा रोग से बचाने के लिए जनवरी के प्रथम सप्ताह में 15 दिन के अन्तराल पर 2 किलो प्रति हैक्टर की दर से मेंकोजेब का पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। .

उपज

जौ की समय पर बोयी व अच्छी तरह प्रबंधित फसल से करीब 40-50 क्विंटल/हैक्टर बीज और करीब इतना ही भूसा प्राप्त होता है।

भंडारण

जौ को अच्छी तरह साफ-सफाई कर सुखाएं व भण्डारगृह में भंडारण करें। भण्डारण के समय दानों में नमी की मात्रा 12 प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिए। भण्डारण पूर्व भण्डारगृह के फर्श व दीवारों को मैलाथियान 50 ई सी या डेकामेशीन या डीडीवीपी के घोल का छिड़काव कर अच्छी तरह उपचारित करें।

जौ की उन्नत किस्मों का विवरण

क्र. सं.	उन्नत किस्में	जारी किये जाने का वर्ष	पकाव अवधि (दिन)	औसत उपज (क्वि./हे.)
सिंचित क्षेत्रों के लिए अनुमोदित किस्में				
1.	आर डी 2794	2013	188-122	35-38
2.	आर डी 2786	2013	188-122	50-56
3.	आर डी 2715	2009	115-120	24-32
4.	आर डी 2668	2007	120-130	40-46
5.	आर डी 2592	2004	117-131	43-53
6.	आर डी 2552	2000	120-127	50-60
7.	आर डी 2503	1997	120-125	40-45
8.	आर डी 2035	1994	125-130	40-48
9.	आर डी 2052	1991	120-125	40-60
बारानी क्षेत्रों के लिए अनुमोदित किस्में				
10.	आर डी 2660	2006	115-120	24-25
11.	आर डी 2624	2004	120-130	28
12.	आर डी 2508	1997	115-120	32-40

